इन्टरव्यू ३५

प्र: आपका नाम क्या है ?
ज: मेरा नाम सिराज अहमद है।

प्र: आपकी उम्र कितनी है ?
ज: मेरी उम्र 25 साल है।

प्र: ये आपका अपना करघा है ?
ज: अपने पर।

प्र: आपके और भी करघे हैं ?
ज: नहीं, बस अपने भाई लोग है उन्हीं का चलता है। तीन कारखाना है।

प्र: तीन कारखाने में कितने करघे हैं ?
ज: बस तीन, तीन पूरे दो लोग काम करते मतलब कुल 6 लोग।

प्र: सबका खाना पीना एक है ?
ज: हां, चार भाई है वही सब करे है। एक करघे पर दो आदमी लगते हैं एक बीने वाला, एक काढ़ने वाला, हां सब तरह का आईटम बनता है तो बेलबुटी बनता है। अकेले क्या काम भी होता है, फिरन बनता है। वो साड़ी देख रहे है वो तो 1400 की है।

प्र: कढ़ाने का काम बच्चे करते हैं ?
ज: हां, बच्चे भी करते हैं बाहर से भी आते हैं, बड़े भी करते हैं।

प्र: आप बच्चे से कराते हैं कि बाहर से ?
ज: बाहर से भी कराते हैं देखीए ये भी कढ़ाता हैं।

प्र: जो अलग से काम करते हैं उन्हें पैसा देते हैं या सीखता है ?
ज: पैसा देते हैं उसको हम महीना देते हैं।

प्र: कितना ?
ज: धीरे-धीरे बढ़ता है सीखाते है तो 500 रुपया फिर धीरे धीरे बढ़ता रहता है। जब बीनने लगता है तो दो हजार रुपया होता है, बढ़ता रहता है। और धीरे-धीरे अपना करता है। इसीलिए हम लोग सीखाते हैं सीख कर अपने घर चल जायेगा।

प्र: तानी-बाना सब आपका होता है ?
ज: हां सब हमारा है, मार्केट से लाते हैं और मार्केट में ही बेचते हैं।

प्र: आप सीधे चौक जाते हैं कि गृहस्था को देते हैं ?
ज: चौक भी जाते हैं गृहस्था को भी देते है सब जगह जाते हैं।

प्र: ज्यादेतर कहां देते हैं ?
ज: ऐसा है कि साड़ी कभी ये पसंद करले कभी वो पसंद कर ले। कभी वो लोग के यहां कोई आ जाता है कि फलानी साड़ी चाहिए तो मैं लेकर, पहुंचा जाता हूं। वो अगर पंसद कर लेते हैं तो दाम भर देते हैं।

प्र: एक साड़ी में कितनी लागत या रेशम कितने का आता होगा ?
ज: मार्केट में कभी 50 रुपये ऊँचा कभी 50 रुपया नीचा होता है, कभी एक तरह का भाव नहीं रहता।

प्र: जैसे इस समय ?

ज: हस समय भाव 300 रुपये की एक साड़ी की तानी हे। 1500 रुपये किलो है। एक साड़ी में 400 रुपये तानी पड़ेगी ।

प्र: और क्या-क्या लगता हैं जरी-वरी लगती होगी ?
ज: सफेद रेशम आता है तो उसे रंगवाते है। उसका भी 200 रंगाई देते हैं। जुड़वाने का देते हैं।

प्र: कितना-कितना देते हैं ?
ज: 150 रुपये देते 6 रंग का रंगाई वाले को और जो जोड़ते है उन्हें भी 150 रुपये देते हैं। 300 रुपये हुआ। 400 रुपये तानी यानी कुल 700 रुपये हो गया।

प्र: जरी भी इसमें लगाते हैं ?
ज: हां, बाजार से जरी 150 रुपये मुट्ठा मिलता है।

प्र: एक साड़ी में कितना लगता होगा ?
ज: डेढ़ मुट्ठा लगता है।

प्र: कढ़ाई का कितना देते हैं ?
ज: महीना के हिसाब में तीन ठो बुनते है तो उसमें 150 रुपया हो गया।

प्र: हर साड़ी में कढ़ाना हेाता है ?
ज: हां, हर साड़ी में नहीं, उसकी मजूरी मिलेगी केवल 500 या 600 बस जब मन चाहे बिने हम लोग मार्केट में लेकर जाते है तो 25 सौ-26 सौ की साड़ी बेचते हैं तो महीना भर 18 दिन की पेमेंट मिलती है।

प्र: जब चौक लेके जाते है तो कितने की बीकती है साड़ी ?
ज: कढ़ाने वाली भी 25 सौ 26 सौ में ही देते हैं जैसे नगद चाहेगी तो 2400 में भी देते हैं।

प्र: लागत कितनी पड़ती है साड़ी पर ?
ज: लागत पन्द्रह सो रुपये।

प्र: मजदूरी जोड़कर बताए ?
ज: मजदूरी हम लोग देंगे हजार रुपया ये साड़ी जो वो तैयार करेगा तो पन्द्रह दिन में करेगा और कहीं इसपे दाम ध ब्बा पड़ गया तो समझों आधा दाम घट जायेगा तो दो हजार की साड़ी 800 में बिकेगी। इसीलिए हम लोग 200 रुप मंहगी साड़ी बेचते हैं ताकी हमलोगों का मेकअप हो जाए क्योंकि ये गारंटी नहीं हैं कि अभी दाग धब्बा लगा जाये छूटती नहीं है।

प्र: डिजाइन कहां से लाते हैं ?
ज: डिजाइन हम दिमाग से बनाते हैं। दिमाग से बनाकर देते हैं तो डिजायनर बना के देते हैं।

प्र: आप खुदी डिजाइन बनाते हैं ?
ज: नहीं, अलग से डिजाइन बनाने वाला होता है। 2000 रुपये पड़ता जाता है डिजाइन पर। फिर पत्ता करवायेंगे तो

2000 पत्ते पर लगेगा तो चार हजार हुआ। तानी 15सौ की पड़ेगी रंगवाई 400 रुपये तो 1800 पड़ेगी। लगभग 2000 की तानी पड़ेगी। अब कुछ 6 हजार हुआ। जोड़ीए एक काम में बीस हजार भी खर्चा पर जाता है।

प्र: एक डिजाइन की कितनी साड़ी बनती है ?
ज: कोई गारंटी नहीं हैं एक साड़ी के कई ग्राहक आ जाते है की हमें ये साड़ी चाहिए तो साल भर 10-10 साल तक चल जाती है। नहीं तो एक साड़ी भी नहीं चलती।

प्र: फैशन पर डिपेन्ड करता है ?
ज: हां नये के नये फैशन निकालते है साड़ी हर तरह की होती है।

प्र: शुरू से ही वो करघे रहे हैं करघे आपके घटे हैं कि बढ़े ?
ज: घट रहे है जो साड़ी मार्केट में 25 सौ पाते थे तीन साल पहले अब 18सौ पा रहे हैं क्योंकि साड़ी कि कीमत बढ़ नही रही, घट रही हैं। और मंहगाई पढ़ रही है इसलिए ज्यादा परेशान है हम लोग।

प्र: ये कितने सालों से हालात ये हैं ?
ज: ये कभी कहीं लड़ाई हो गई कहीं जलजला आ जाता है। अभी अहमदाबाद में जो हुआ उससे हमलोगों को काम बैठ गया। मौसम की वजह से भी रुकता 5 महीना 6 महीना काम नहीं होता बरसात के दिनों में काम रूक जाता है।

प्र: ये कारखाना किराये पर लेकर लगाये हैं ?
ज: नहीं, अगर लेंगे काम बढ़ायेंगे भी तो 300-400 रुपया किराया देना पड़ेगा कारखाने।

प्र: ये जगह तो आपकी अपनी है ?
ज: हां अपनी जगह है तो कुछ बचता है नहीं तो कुछ बचता नहीं कारखाना बनाना पड़ेगा तो कारीगर रखना पड़ेगा तो उसी में मेकअप करना होगा इसलिए। एक साड़ी में हम लोगों को 300 रुपया मुनाफा पड़ता है अगर मेहनत अगर कारीगर कर दे तो महीना तीन साड़ी उतर गई तो 900 रुपये मिल जाते है। तो दो महीना में 28सौ रुपया या चार महीना में 36 सौ रुपया होता है।

प्र: पिछले कई महीनों में रेशम का दाम घटा है कि बढ़ा ?
ज: रेशम के घटाव बढ़ाव हैं इसीलिए हम लोग 4 महीना कायदे से कमाते हैं। उसके बाद घाटा ही घाटा जाता फिर उस साड़ी का हम लोग 300 रुपये घट जाता है फिर वे साड़ी कम दाम में खरीद के रखते हैं और जब सीज़न आता है बेच देते हैं अच्छे दाम से।

प्र: सही दाम पर बिके इसके लिए कोई समिति है ?
ज: नहीं कोई ना समिति है ना कमेटी है। ये कच्चा रोजगार है।

प्र: आप लोग तो बहुत बड़ी संख्या में यहां है बनारस में फिर भी कोई समिति नहीं है ?
ज: नहीं, लेकिन इसका कोई मायने नहीं है।

प्र: क्यों नहीं बनाये ?
ज: बस रोजगार बढ़ते गया बढ़ते-बढ़ते मार्केट में बढ़ गया सरकार इन पर ध्यान नहीं देती है। इनकम टेक्स पर ध्यान

देती है।

प्र: बैंक में ऋण मिलता है कभी लिए है ?
ज: नहीं।

प्र: कोई योजना का पता है ?
ज: नहीं।

प्र: कभी कर्ज लेना हो तो कहां से लेते हैं ?
ज: गद्दी वालों से लेते हैं 2-3 कितना भी जरूरत होता है लेते है वो जानता है कि ये आदमी कटवा देगा। ब्याज देना नहीं पड़ता।
रूकावट
अन्य आवाज - हमारे यहां ब्याज लेना देना दोनों जायज नही हैं। बैंक से कर्जा लेंगे तो ब्याज देना होगा इसीलिए कर्जा लेते नहीं। मदनपुरा में जाओगे 90 प्रतिशत कारखाना अंधेरे में मिलो इस समय लाईट नहीं है।

प्र: पावरलूम यहां कितना है ?
ज: 75 प्रतिशत हैण्डलूम है 25 प्रतिशत पावरलूम है। हैण्डलूम ज्यादा है।

प्र: कारण क्या है हैण्डलूम का मंदा होने का ?
ज: मशीन पर ज्यादे बनने लगा है। हमलोगों का अगर कोई डिजाइन पंसद आया तो गद्दीदार उसे मशीन में बनवा लेते हैं। इसी वजह से साड़ी का काम घट गया है।

प्र: आप अगर जो डिजाइन बनायेंगे उसे सिर्फ आप ही बना सकते हैं और कोई नहीं ?
ज: नहीं, अपना दिमाग खुद लगाते हैं।
रूकावट
ग्राफ तो मेरे ही पास ही रहेगा ना। डिजाइनर तो हमें ही देगा ना डिजाइन और उसका पैसा लेगा। दूसरा जब तक ग्राफ नहीं लेगा तब तक वो कैसे बनायेगा।

प्र: आप अपनी कमाई बचाकर कभी कुछ काम कर सकें ?
ज: नहीं, कुछ नहीं कर सके। कमाने वाले गद्दी वाले हैं।

प्र: आप अपने बच्चें को इस लाइन में लायेंगे ?
ज: इसी लाइन में पैदा हुआ है तो इसी लाइन में लगें यही तो काम हैं। नौकरी पेशा तो करेंगे नहीं। पढ़ लिख भी इसी में आयेंगे। रुपये में नब्बे परसेन्ट भी नही 100 परसेन्ट बुनकारी में मिलेंगे।
रूकावट
हाई स्कूल भी पढ़े तो इसी बिजनेस में आयेंगे। बीए करने के बाद भी लोग बिजनेस में ही आते है। नौकरी मिलती थी पसन्द नहीं आया।

प्र: दिन पर दिन जो स्थिति खराब हो रही है ?
ज: हां स्थिति खराब हो रही है।

रूकावट

हम कोई बंधुआ नहीं है। जब समय मिलता है काम करते हैं। जितनी मेहनत करेंगे उतना कमायेंगे। यहां आजादी है। अन्य आवाज- डयूटी पे जाना है परेशानी। कर्जा लें बैंक से परेशानी दे नहीं पाये पता लगा चार पुलिस वाले लेकर आये साला क्या जरूरत है इतनी परेशानी। हम कम खायेंगे कम कमायेंगे।